Dec. 2020

SRMS Trust Bulletin

# आयाम

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

## पैनल के सामने हुआ था मेरा प्रॉपर इंटरव्यूः ऋचा मूर्ति

PAGE 6


- राम मूर्ति जी ने समाज सेवा में स्वयं को किया समर्पित - PAGE 03
- ट्रस्ट के 30 वर्ष होने पर वीसी व एसएसपी ने दी बधाई - PAGE 4-5
- पूरे परिवार का साथ होना सबसे बड़ा अचीवमेंट- PAGE 09
- एसआरएमएस एकेडमिक लीडरशीप मीट 2020 - PAGE 10-11
- पुरस्कृत कहानी- 'महान त्याग का उल्टा गणित'- PAGE 14-15
- बदलने से भाने लगा है 'सुवास' बेकरी का 'स्वाद' - PAGE 17

# 2020

## नित नये आयाम...

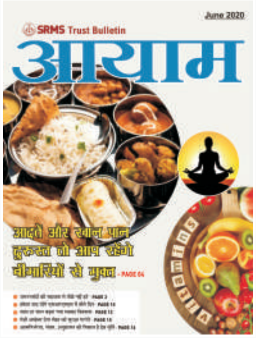

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

## वर्ष 2020 ने सब बदल दिया

पिछले वर्ष 2019 के नवंबर में चीन में धमके वायरस कोविड 19 से दुनिया पर क्या असर पड़ेगा। इस वर्ष के आरंभ में किसी को भनक तक नहीं थी। भारत में इससे लोगों का परिचय मार्च में जनता कर्फ्यू और लाकडाउन के बाद ही हुआ। अप्रैल के बाद के महीने इसकी विभीषिका को बताने के लिए काफी रहे। जहां हर रोज बढ़ता कोविड संक्रमितों का आंकड़ा और मृतकों की संख्या लोगों को डराने के लिए काफी थे। इस बीच सरकार ने लोगों को जागरूक करना शुरू किया। दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी से शहरों की गली से लेकर गांव तक के बच्चे, बूढ़े और जवान परिचित हो चुके थे। यह वायरस की दहशत ही थी कि लोगों ने अपनी दिनचर्या बदली। स्वच्छता को जीवन में अनिवार्य बनाया। प्रतिरोधी क्षमता से भी लोगों का परिचय हुआ। स्वास्थ्य को भी लोगों ने महत्व देना शुरू किया। सच माने तो कोविड ने या वर्ष 2020 ने काफी सारी मान्यताएं बदल दीं। यह वर्ष लोगों के बदलाव के लिए जाना जाएगा। क्योंकि बिना बदले वायरस से बचाव मुश्किल है। इसकी वजह कोविड-19 वायरस के खुद को लगातार रूप बदलना और खतरनाक होते जाना भी है। ऐसे में हमें और आपको बदलना ही पड़ेगा।

**जय हिंद**

## अमृत कलश

**"सफाई देने में अपना समय व्यर्थ ना करे, लोग वही सुनते है जो वो सुनना चाहते है।"**

## EDITORIAL TEAM


Amit Awasthi - Editor
Rishabh Tiwari - Correspondent
Indu Dixit - Photographer
Gautam Rai - Photographer
Yasmeen Khan - Designer
Vineet Sharma - (Co-Ordinator, IMS)
Dr. Ekta Rastogi - (Co-Ordinator, IBS)

**Cover photo** courtesy by **Dr. Lovekush Gupta**



**Mail us:** amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in
13 km., Ram Murti Puram, Bareilly-Nainital Road, Bhojipura, Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090


# समाजसेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया

कृषि प्रदर्शनी के दौरान मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी लेते स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व मंत्री राम मूर्ति जी। (फाइल फोटो-एसआरएमएस आर्काइव)

बचपन से ही राम मूर्ति जी को अंग्रेजों के अत्याचारों की बातें सुनने को मिलती थीं। जैसे जैसे वह बड़े हुए अंग्रेजों के जुल्म को उन्होंने भी देखा। पराधीन भारत में कैसे इसे रोका जाए राम मूर्ति जी अक्सर इसी सवाल पर मंथन करते रहते थे। यही वह समय था जब मोहनदास कर्मचंद गांधी का स्वतंत्रता संग्राम में प्रादुर्भाव हुआ। राम मूर्ति जी ने भी गांधी जी के विषय में पढ़ा। इससे उनकी समाज उत्थान और देशभक्ति की भावना और भी मजबूत हुई। उन्होंने गांधी जी के अहिंसा के शस्त्र के सामने अंग्रेजों की सेनाओं को नतमस्तकक होते देखा। दक्षिण अफ्रीका में रेलवे स्टेशन पर गांधी जी से किए अमानवीय व्यवहार की घटना को राम मूर्ति जी बार बार पढ़ते थे और गांधी जी द्वारा लिए गए अंग्रेजों को देश से खदेड़ने के संकल्प को दोहराते थे। यही वजह रही कि उन्होंने गांधी जी को अपना आदर्श बनाया और उनके अहिंसा के शस्त्र को अपना कर अपना जीवन देश और समाज सेवा को समर्पित कर दिया। अंग्रेजों के खिलाफ गांधी जी के आंदोलन की मशाल वह देश के आजाद होने तक उठाए रहे। साथ ही किसान और मजदूरों का जीवन स्तर उठाने के लिए उन्हें शिक्षित करने में मदद के लिए भी हमेशा आगे रहे। एसआरएमएस ट्रस्ट उन्हीं के सिद्धांतों पर समाजसेवा में संलग्न है।

### Vision

- To be partner in building India a world leader in Medical Education & Health Care.
- To establish & develop world class self reliant institute for imparting Medical and other Health Science education at under-graduate, post-graduate & doctoral levels of the global competence.
- To serve & educate the public, establish guidelines & treatment protocols to be followed by treating hospitals.
- To provide quality & affordable health care facilities and services to all sections of society.

### Mission

- To strive incessantly to achieve the goals of the Institution.
- To impart academic excellence in Medical Education.
- To practice medicine ethically in line with the global standard protocols.
- To evolve the Institution to the status of a Deemed University.
- Our Students - Our Assets.
- Our Staff - Our Means.

### Values

Integrity Excellence
Fairness Innovativeness

प्रो. के.पी. सिंह
Prof. K.P. Singh
कुलपति
Vice-Chancellor

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली–243006
MAHATMA JYOTIBA PHULE ROHILKHAND UNIVERSITY,
BAREILLY-243006

दिनाँक: 28.9.2020

## सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा इंजीनियरिंग, मेडिकल, फार्मेसी जैसे शिक्षण संस्थान संचालित हैं, साथ ही ट्रस्ट द्वारा हजारों लोगों को रोजगार भी दिया गया है।

आशा है कि ट्रस्ट भविष्य में भी जनहित की योजनाएं संचालित करता रहेगा एवं इसके द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती रहेगी।

ट्रस्ट की स्थापना के अगले माह तीस वर्ष पूर्ण होने पर मेरी शुभकामनाएं।

शुभकानाओं सहित!

(के०पी०सिंह)

श्री देवमूर्ति,
चैयरमैन, श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट
बरेली।

Ph./फोन : कार्या./Off.+91-581-2527282, निवास/Resi.+91-581-2523378, फैक्स/Fax कार्या./off.+91-581-2528384,
निवास/Resi.+91-581-2523334, e mail : vcoffice@mjpru.ac.in

रोहित सिंह सजवाण,
आई.पी.एस.

पत्र संख्या-एसटी / एसएसपी...73/20
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद बरेली।
सी0यू0जी0-9454400260
क्यू0मेल-sspbry-up@upcctns.gov.in
दिनांक...17/09/2020

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आम लोगों को रोजगारपरक शिक्षा, स्वास्थ्य और जनसेवा से उनके सशक्तिकरण में कार्यरत श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट आगामी माह में अपनी स्थापना के तीस वर्ष पूर्ण कर रहा है।

2– मुझे यह कहते हुए गौरव हो रहा है कि आपके ट्रस्ट द्वारा जनहित में काफी योजनाएं संचालित करने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति को बनाये रखा है। इसके अतिरिक्त कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी के समय लॉकडाउन के दौरान प्रतिदिन सैकडो जरूरतमंद व्यक्तियों को भोजन/खाद्य सामग्री व रोजगार उपलब्ध कराना मानवीय एवं सामाजिक दृष्टिकोण से अतुलनीय है। लॉकडाउन के दौरान उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों में आपकी संस्था द्वारा किये गये इस सराहनीय कार्य एवं उपलब्ध कराई गई चिकित्सीय व्यवस्थाओं से न केवल आम जन–मानस में अच्छे कार्य के प्रति सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ है, अपितु समाज में आपकी संस्था ने एक महत्वपूर्ण आयाम भी हासिल किया है।

3– आशा करता हूँ कि श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट भविष्य में भी इसी प्रकार मानवीय, सामाजिक समरसता और सद्भावपूर्ण तरीके से अपने कार्यों/योजनाओं को संचालित करते हुए समाज को अपना योगदान प्रदान करता रहेगा।

4– ईश्वर से कामना है कि आपका ट्रस्ट निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहकर चहुमुखी आयाम हासिल करें। इसी के साथ आपकी सफलता की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

भवदीय

17/9/20

( रोहित सिंह सजवाण )

श्री देव मूर्ति
चेयरमैन श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट
बरेली।

### एसआरएमएस गुडलाइफ की डायरेक्टर ऋचा मूर्ति जी ने कई मुद्दों पर रखी अपनी बात, कहा-

# 'पैनल के सामने हुआ था मेरा प्रॉपर इंटरव्यू'

एसआरएमएस गुडलाइफ हास्पिटल की डायरेक्टर श्रीमती ऋचा मूर्ति जी किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। सम्मानित परिवार की संस्कारी बहू, सहयोगी पत्नी, ममतामयी मां, गरिमामयी शिक्षक, उदार समाजसेवी और चहेती टीम लीडर। सब उन्हीं की भूमिकाओं के रूप हैं और सभी भूमिकाओं में वह बिना किसी से अन्याय किए अपना सौ फीसद योगदान देती हैं। शायद यही वजह है कि एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देवमूर्ति जी, ट्रस्टी आशा मूर्ति जी उन पर पूरा भरोसा करते हैं। अपनी बेटी अंबिका जी और बेटे आदित्य जी से कम फख्र नहीं करते। उन पर अपना स्नेह उड़ेलते हैं। हमेशा अपने काम में अपनी भूमिकाओं में डूबी रहने वाली ऋचा जी ने आयाम के लिए कुछ समय निकाला। पेश है उनसे हुई बातचीत के मुख्य अंश...

- **ट्रस्ट की सफलता के पीछे हैं सिर्फ पापा जी और उनकी हार न मानने वाली सोच**
- **पापा जी, मम्मी जी, आदित्य जी और बच्चों का भी मुझे हरदम मिला पूरा सपोर्ट**
- **कभी लगा नहीं हम बड़े हो गए, अब बच्चों को देख लगता है, हां हम भी बड़े हो गए**
- **बेटे ने कहा, मां मुझे बर्थडे गिफ्ट कुछ नहीं चाहिए, दो जरूरतमंद मरीजों की सर्जरी फ्री करा दो**
- **कोविड के दौरान लोगों के खाने के लिए बच्चों ने खुद ही दे दी अपनी पाकेट मनी**
- **संतुष्ट हूं कि बच्चों की परवरिश ठीक हुई, उनमें वैल्यू सिस्टम, कल्चर बरकरार है**
- **हम घर में काम कर रहे हों या आफिस में, जिस भी फील्ड में हों अपना बेस्ट दें**

**सवाल:** आपने एसआरएमएस मेडिकल कालेज के संकल्प और फिर उसे बनते देखा है। पहली बार आपको कैसा लगा बरेली जैसे छोटे से शहर में मेडिकल कालेज बनाने का विचार ?

**ऋचा जी:** आदित्य जी से मैरिज के बाद मैं मई 2002 में पहली बार बरेली आई। पापा जी (देवमूर्ति जी) के साथ निर्माणाधीन मेडिकल कालेज देखने गयी। घर से निकल कर रामपुर गार्डन से लेकर पूरे शहर में हमने छोटे-छोटे बहुत से क्लीनिक और हास्पिटल देखे। मन में खयाल आया जब बरेली में इतने हास्पिटल पहले से ही हैं, तो हम क्यों एक और हास्पिटल खोल रहे हैं। शाम को खाने के समय पापा जी से पूछा कि बरेली में डाक्टर और हास्पिटल की कमी नहीं है, ऐसे में एक और हास्पिटल क्यों ? उन्होंने कहा- यह सही है कि यहां डाक्टर और हास्पिटल हैं। लेकिन बहुत सारी जरूरी सुविधाएं यहां अब भी नहीं हैं, जिनके लिए मरीजों को दिल्ली जाना पड़ता है। अत्याधुनिक उपकरणों और सुविधाओं से युक्त एक हास्पिटल यहां बेहद जरूरी है। अपने हास्पिटल के जरिये मरीजों को वह सारी सुविधाएं यहीं उपलब्ध करवाना ही हमारा संकल्प है। वह भी वाजिब खर्च पर। पापा जी की बात ठीक लगी। वह लोगों की स्वास्थ्य संबंधी उम्मीदों को पूरा करने वाला अत्याधुनिक सेंटर खोल रहे थे। मैं वहां का काम देखने लगी। डेढ़ महीने बाद 4 जुलाई 2002 को हास्पिटल खुला। मरीज आना शुरू हुए। प्राइवेट वार्ड में पहले मरीज का आना। मेडिकल कालेज के लिए अप्लाई करना। उसकी परमीशन। धीरे-धीरे मेडिकल कालेज का बढ़ना, लोगों का बढ़ता भरोसा, हमने नजदीक से देखा है। आज देश के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल कालेजों में एसआरएमएस मेडिकल कालेज का नाम है। यह सब क्वालिटी सर्विस और लोगों के भरोसे से ही संभव

हुआ है। लेकिन इस सबके पीछे अगर कोई एक था तो वह थे पापा जी (देव मूर्ति जी) और उनकी न हारने वाली सोच। हम लोग परिवार के नाते उनके साथ, उनके सपोर्ट में हमेशा से थे। आज बरेली और यहां से बाहर के वह लोग भी उनकी सोच की तरीफ करते हैं, जो पहले उनके विजन से इत्तिफाक नहीं रखते थे। उनका विजन हमारी और लोगों की सोच से परे है।

**सवाल:** सुना है कि विवाह के बाद आप एमबीए के बच्चों को पढ़ाने लगीं थीं, क्या यह सच है ?

**ऋचा जी:** जी, यह सच है। मैंने आईआईएलएम नई दिल्ली से एमबीए (फाइनांस) किया है। गोल्ड मैडलिस्ट रही हूं। पहले ही दिन पापा जी ने कह दिया कि घर में नहीं बैठना है। घर का काम हो रहा है। पार्ट टाइम घर को देखो, और अपनी पसंद का काम करो। शादी के एक महीने में ही मैंने सीईटी जाना शुरू कर दिया। इससे पहले पैनल के सामने मेरा प्रापर इंटरव्यू हुआ। एमबीए डिपार्टमेंट में फाइनांस लेक्चरर के रूप में काम शुरू हुआ। पंद्रह साल लगातार फाइनांस की क्लासेस लीं। फैकेल्टी के रूप में प्रेजेंटेशन भी दिए। एमबीए डिपार्टमेंट को हेड भी किया। फिर वूमंस कालेज (सीईटीआर) में डायरेक्टर के रूप में कई साल काम किया। डेयरी के काम की जिम्मेदारी भी ली। इस बीच बच्चे बड़े हो रहे थे। उन्हें भी समय देना जरूरी हो गया। ऐसे में लेक्चरर के बजाय एडमिनिस्ट्रेटिव लाइन में आ गई। कई भूमिकाएं निभाई। इसी बीच गुडलाइफ हास्पिटल बनने लगा। यहां कंस्ट्रक्शन का काम देखा। पहले ही दिन से डायरेक्टर बना कर मुझे इसकी नई जिम्मेदारी दे दी गई। पापा जी और आदित्य जी से तो लगातार गाइडेंस और नालेज मिलती ही है, आज सभी से कुछ न कुछ लगातार सीख रही हूं। उसे इंप्लीमेंट करती हूं। अच्छा काम हो रहा है।

**सवाल:** गुडलाइफ हास्पिटल स्थापित करने की वजह क्या रही ?

**ऋचा जी:** एसआरएमएस मेडिकल कालेज लोगों को अच्छी सुविधाओं के साथ सेवा कर रहा है। लेकिन कई बार लोग विश्वस्तरीय सुविधाएं चाहते हैं। हास्पिटल के माहौल से घबराते हैं। ऐसे लोगों को हास्पिटल में उनको घर जैसा माहौल और सुविधाएं देने के लिए 2018 में गुडलाइफ हास्पिटल स्थापित किया गया। 'होम अवे होम' के कांसेप्ट के साथ घर जैसा माहौल और गुणवत्तापूर्ण इलाज देने के लिए गुडलाइफ शुरू किया गया। दो वर्ष से ज्यादा हो गया। इस छोटे से समय हमने अच्छा काम किया। स्वस्थ होकर जा रहे संतुष्ट मरीजों को देख कर खुशी होती है। हम लगातार कुछ न कुछ नया कर रहे हैं।

**सवाल:** आपने एमबीए करने के दौरान जाब या एंटरप्रिन्योर के बारे सोचा था ?

**ऋचा जी:** मेरे पापा का कानपुर में आयरन एंड स्टील का बिजनेस था। उसमें मेरा कोई रोल नहीं था। ऐसे में एमबीए के दौरान एक दो साल जाब के बारे में सोचा था। लेकिन बाद में सब बदल गया। 26 अप्रैल को एमबीए में मेरा आखिरी पेपर था। अगले महीने ही शादी हो गई थी। ऐसे में जाब ज्वाइन करना संभव ही नहीं था। इसीलिए कैंपस प्लेसमेंट में भी शामिल नहीं हुई। शादी के बाद तो अपना इंजीनियरिंग और एमबीए कालेज होने से दूसरी जगह जाब की बात ही बेमानी हो गई।

**सवाल:** जाब के लिए देव मूर्ति जी के साथ क्या परिवार के दूसरे सदस्यों ने भी आपको मोटिवेट किया ?

**ऋचा जी:** अगर परिवार साथ में न हो किसी भी पुरुष या महिला का बाहर काम करना किसी तरह भी संभव नहीं है। कोई भी अकेले कुछ भी अचीव नहीं कर सकता। अगर पापा जी इतना आगे आए हैं तो उसमें मम्मी जी और आदित्य जी के सपोर्ट की अनदेखी नहीं की जा सकती। मैंने काम करना शुरू किया उसमें मम्मी जी का सपोर्ट था ही। मेरी बेटी तीन महीने की थी। मम्मी के पास मैं उसे छोड़ कर काम पर जाती थी। आदित्य का सपोर्ट हमेशा रहा। वह हमेशा हमारे साथ रहे। गाइड करते रहे। सभी के सपोर्ट से मैं आज यहां पहुंच पाई। आज तो बच्चे भी सपोर्ट करते हैं। काम के बारे में समझते हैं। परिवार और काम को देखते हुए गुडलाइफ हास्पिटल मुझे ज्यादा अच्छा लगा। घर से काफी पास होने से मैं परिवार और काम दोनों जगहों को आसानी से संभाल पा रही हूं। प्रापर सपोर्ट सिस्टम मिले बिना कोई भी काम करना संभव नहीं। मुझे कभी यह नहीं लगा कि मैं बाहर से इस घर में आई हूं। पहले ही दिन से ऊपरवाले के साथ सभी का आशीर्वाद मिला।

**सवाल:** ज्यादातर लोग मेडिकल कालेज बनाने के विरोध में थे, आपने कभी इसे महसूस किया ?

**ऋचा जी:** जब हम ग्रो कर रहे थे। कई मुश्किलें आईं। ज्यादातर पापा जी ही उनसे निपटते थे। हम तक कम ही बाते पहुंचीं। कुछ चीजें ही हम तक पहुंचती थीं। आदित्य जी भी कई मामले संभालते थे। यह बड़ी और मुश्किल यात्रा थी। एक दूसरे के सपोर्ट से हमने इसे पार किया। जब आप कुछ बड़ा करना चाहते हैं तो रिस्क भी बड़ा होता है। फिर जब आप अपने इंस्टीट्यूट और नाम को कहीं देखते हैं तो उसकी संतुष्टि, खुशी बयां करना आसान नहीं होता। पापा जी हमेशा कुछ नया करने का संकल्प लेते रहते हैं। इसकी एक ही वजह होती है। वह है सभी को कुछ न कुछ फायदा पहुंचाना। दूसरों के जीवनस्तर को उठाना। इसी वजह से कभी बेकरी खुलने की बात होती है तो कभी टेलरिंग यूनिट। अब म्यूजिक इंस्टीट्यूट रिद्दिमा का

प्रोजेक्ट सामने है। ठाकुर जी की कृपा है कि सब प्रोजेक्ट पूरे हो रहे हैं।

**सवाल:** प्रोफेशन के साथ आप समाजसेवा के लिए समय कैसे निकाल पाती हैं ?

**ऋचा जी:** आप अगर कुछ करना चाहते हैं तो समय निकल आता है। नहीं चाहते तो नहीं। मैं बहुत सा सोशल वर्क तो नहीं कर पाती, लेकिन जो लगता है कि करना है। हो जाता है। समय भी निकल आता है। बात सिर्फ टाइम मैनेजमेंट की है। आप भले ही घर मैनेज कर रहे हों, सबके लिए टाइम मैनेजमेंट जरूरी है। अगर आप टाइम मैनेजमेंट नहीं कर पाते तो कुछ भी नहीं कर सकते। दिन का प्लान करना जरूरी है। मैं पूरे दिन का प्लान बनाती हूं कि कब क्या करना है। यह प्लान मैं दिन में सुबह ही कर लेती हूं। काम आसान हो जाता है। इसी से मैं दोस्तों के साथ भी समय इंज्वाय कर लेती हूं।

**सवाल:** आपकी क्या हाबी थी जो व्यस्त होने से छूट रही हो ?

**ऋचा जी:** मेरी सबसे बड़ी, फेवरिट हाबी रीडिंग थी। कोई न कोई बुक मैं पढ़ती रहती थी। पढ़े बिना नींद ही नहीं आती थी। शादी के बाद, पारिवारिक जिम्मेदारियों, काम और प्रोफेशन की वजह से पीछे छूट गई है। अब पढ़ना काफी रेयर हो गया है। कजिन और परिवारी जनों को इसके बारे में पता है। वो लोग बुक्स लाकर देते भी हैं। कोशिश करती हूं, चाहती हूं आज भी पढ़ना। बाकी ऐसी कोई हाबी नहीं छूटी। वाकिंग और कुकिंग आज भी कर लेती हूं। बच्चों और घर वालों के लिए कुछ न कुछ किचन में बनाती रहती हूं। खुद को फिट रखने के लिए पहले योगा करती थी। आधा घंटा वाकिंग तो आज भी कर लेती हूं।

**सवाल:** अगर पर्याप्त समय मिले, तो आप क्या करना चाहेंगी ?

**ऋचा जी:** आप पहले पूछते तो पहली चीज होती सोना। खूब सोना चाहती हूं। पर आज कल कोविड की वजह से देर रात तक की पार्टियां नहीं होतीं ऐसे में सोने का काफी समय मिल जाता है। नई नई जगहों पर घूमने का शौक है। लेकिन वह हो नहीं पाता। बच्चों के साथ समय बिताना भी पसंद है। कोविड की वजह से यह भी पूरा हो रहा है। बाकी मैं अपनी लाइफ से पूरी तरह से सैटिस्फाइड हूं। अफसोस किसी चीज का नहीं है। खाली नहीं बैठ पाती। कुछ न कुछ करती रहती हूं। किचिन में कुछ न कुछ बनाती रहती हूं। त्यौहारों पर तो सारे पकवान खुद ही बनाना होता है, बिना किसी हेल्प के। गुझिया, शकरपारे सब बनाना इंज्वाय करती हूं। घर में सभी को खाने पीने का शौक है। मीठा खाना तो सभी की पसंद है। सब की पसंद की कोई न कोई डिस आज भी बनाने की कोशिश करती हूं।

**सवाल:** 18 साल से ज्यादा शादी को हो गए, यादगार मूमेंट क्या रहा ?

**ऋचा जी:** कोई एक मूमेंट नहीं है। 18 साल से ज्यादा हो गया मेरी शादी को। हमें कभी रियलाइज नहीं हुआ हम इतने बड़े हो गए। बच्चों को देखते हैं तब लगता है कि इतना टाइम हो गया है। बेटी जल्द 18 वर्ष की हो जाएगी, बेटा 15 वर्ष का है। इस बीच हमने काफी सीखा। कुछ मुश्किलों भरे पल भी रहे हैं। याद रहेंगे। बुरा वक्त भी कुछ न कुछ सिखा कर गया है। सब हमेशा याद रहेगा। बहुत छोटी चीजे हैं। तीन साल पहले पापा जी ने देव दीपावली यहीं मनाने का फैसला किया। पहले हम लोग वृंदावन में बिहारी जी के मंदिर में फूल बंगला कराते थे। पहली बार यहीं मंदिर में आयोजन किया गया। मैं सीईटी में ही थी। तैयारियां देखने गई। देखा कैसे कौन क्या कर रहा है। सब को बताया क्या करना है, कैसे करना है। आज बेहद आकर्षक रूप में देव दीपावली का आयोजन हो रहा है। देखते देखते हम भी बड़े हो गए, ट्रस्ट भी बड़ा हो गया। एक इंजीनियरिंग कालेज से अब डेढ़ दर्जन से ज्यादा संस्थान हो गए। यह सब देख कर सैटिस्फेक्शन होता है। अच्छा लगता है। अभी पिछले दिनों गुडलाइफ में एक बिल सामने आया। आपरेशन का बिल था। हमारे यूरोलाजिस्ट डा.महेश त्रिपाठी का मरीज था। बिल में सर्जरी की फीस 11 रुपये थी। डॉ. महेश से बात की। उन्होंने कहा कि नहीं बिल सही है मैंने इस मरीज से सिर्फ 11 रुपये ही सर्जरी के रूप में लिए हैं। इसका जिक्र शाम को बच्चों से किया। बेटे ने तुरंत कहा, मां मुझे बर्थडे गिफ्ट कुछ नहीं चाहिए। दो जरूरतमंद मरीजों की सर्जरी आप फ्री करा दियास करो। कोविड के दौरान भी बच्चों ने अपनी पाकेट मनी लोगों के खाने में खर्च के लिए दी। यह देख लगता है कि घर के माहौल में बच्चों की सोच भी अच्छी हो गई। संतुष्ट हूं कि हमने बच्चों की परवरिश ठीक की। हमारे घर का वैल्यू सिस्टम और कल्चर बरकरार है। इसे लगता है कि कुछ छूटा नहीं, कुछ मिस नहीं किया।

**सवाल:** घर संभालने वाली और वर्किंग वूमन दोनों को क्या संदेश देंगी ?

**ऋचा जी:** महिलाओं के लिए अक्सर सोचा है कि वह होम मेकर हैं। तो कोई खास बात नहीं। यह सोच ही गलत है। बच्चों पर, उनकी सोच पर मांओं का सबसे ज्यादा असर होता है। अगर मेरी सोच सुलझी हुई है। मैं बच्चों को कुछ अच्छा सिखा पा रही हूं तो यह उनके और सोसायटी के लिए बेहद जरूरी है। यह काम आसान नहीं। बेहद महत्वपूर्ण है। माहौल तो घर से ही डेवलप होता है। खुशी तो घर से ही मिलती है। ऐसे में लेडीज की भूमिका खास हो जाती है। वर्किंग महिलाओं के लिए टाइम मैनेजमेंट और अपना सपोर्ट सिस्टम डेवलप करना जरूरी है। प्लान करके ही टाइम के अनुसार काम करना पड़ेगा। सामान्यत: महिलाओं के लिए खुद के लिए टाइम नहीं निकल पाता। ऐसे में सभी को खुद के लिए भी टाइम निकालना जरूरी है। जहां पर आपको खुशी मिलती है उस एरिया में काम करें। तभी घर, परिवार और काम में बैलेंस हो सकता है। हम घर में काम कर रहे हों या आफिस में, जिस भी फील्ड में हों अपना बेस्ट दें। शाम को यह लगे कि हमने ठीक किया। यही सक्सेस है।

## एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने किया वर्ष 2020 को याद, कहा

# पूरे परिवार का साथ होना सबसे बड़ा अचीवमेंट

- कोविड महामारी के बाद भी ऊपरवाले की कृपा से हासिल हुईं महत्वपूर्ण उपलब्धियां
- लोगों का भरोसा था तभी 16 सौ से ज्यादा कोविड संक्रमितों का कर पायें इलाज
- सुवेश, सुवास की स्थापना, ट्रस्ट को विवि का आशय पत्र भी 2020 में ही मिला

**बरेली:** एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने वर्ष 2020 को याद किया। कोविड महामारी के बाद भी टेलरिंग यूनिट सुवेश, बेकरी सुवास की स्थापना और ट्रस्ट को विश्वविद्यालय का आशय पत्र हासिल की गई उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि महामारी के बाद भी आज पूरे ट्रस्ट परिवार का एक साथ होना हमारा सबसे बड़ा अचीवमेंट है। यह ऊपरवाले की कृपा है।

एसआरएमएस सीईटीआर में 31 दिसंबर को बीते वर्ष की उपलब्धियों को याद करने और नए वर्ष के स्वागत के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने कहा कि पिछले कई वर्षो से वर्ष के अंतिम दिन साल भर की उपलब्धियों और नए वर्ष की योजनाओं के लिए हम सब एकत्रित होते रहे हैं। आज भी यह वर्ष 2020 की अंतिम शाम है। कोविड 19 की वजह से चर्चित, सबसे अजीब वर्षों में शामिल यह वर्ष 2020 दोबारा नहीं आएगा। ऊपरवाले की कृपा से कोविड महामारी के बड़े कष्ट के बाद भी हमारा पूरा ट्रस्ट परिवार आज इकट्ठा है। यह हमारे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह वर्ष हमारे लिए भी चुनौतीपूर्ण रहा। हम भी महामारी से बचाव के लिए देश और समाज के साथ खड़े रहे। 16 सौ से ज्यादा मरीजों को हमने अटेंड किया। ठीक कर उन्हें घर भेजा। यह हम पर भरोसा ही था कि महामारी से संक्रमित होकर डीएम, सीएमओ, विधायक, अफसर खुद और अपने परिवार के साथ यहां इलाज के लिए आए। इसके लिए ट्रस्ट परिवार के सदस्य सभी स्वास्थ्य कर्मियों को बधाई। सभी अपने काम में तत्पर रहे। किसी ने कोविड ड्यूटी से इनकार नहीं किया। महामारी के बावजूद इस वर्ष का न तो हमारे रोजगार पर हुआ और न ही किसी की सैलरी पर। भगवान की बड़ी कृपा हम पर रही। हम लोग जैसे पहले काम कर रहे थे वैसे ही काम कर रहे हैं। इस वर्ष की अन्य उपलब्धियां भी कम नहीं रहीं। इसी वर्ष लाकडाउन के दौरान ही टेलरिंग यूनिट सुवेश और बेकरी सुवास संचालित की गई। सुवेश के जरिये सभी इंप्लाइज के लिए ड्रेस के साथ पीपीई किट भी बनाई। जिसकी चर्चा पूरे प्रदेश में हुई। इसे पहनने के बाद कोई भी कोविड संक्रमित नहीं हुआ। माइक्रोबायोलाजी विभाग की सेंट्रल रिसर्च लैब को एनएबीएल मान्यता हासिल हुई। इसके जरिये हमने एक दिन में 90 आरटीपीसीआर टेस्ट का आंकड़ा भी पार कर लिया। सीईटी में स्थापित हमारी ईएमई/ ईएमसी लैब को एआईसीटीई ने मान्यता देते हुए 20 लाख रुपये प्रदान किए। यह उ.प्र और उत्तराखंड में इकलौती लैब होगी जो बच्चों को ट्रेनिंग देगी। इस वर्ष हमने कंस्ट्रक्शन के बचे हुए काम भी पूरे किए। विश्वविद्यालय बनाने के लिए आशय पत्र भी इसी वर्ष हमें मिला। अब जल्द ही विवि का सपना साकार हो जाएगा। इससे पीएचडी शुरू हो जाएगी और रिसर्च पर भी जोर दिया जा सकेगा। हिंदुस्तानी कला, संगीत और संस्कृति को संरक्षण करने के विचार को रिद्धिमा के रूप में मूर्त करने का काम भी इसी वर्ष जून में आरंभ किया गया। 17 जनवरी में इसका उद्घाटन किया जाएगा। मिल्क प्लांट संचालित करने के प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। इससे जल्द ही सभी को 100 फीसद शुद्ध दूध भी मिलना शुरू हो जाएगा। कुल मिला कर कहें तो यह वर्ष हमारे लिए उपल्धियों भरा रहा है। इसके लिए ट्रस्ट परिवार के सभी सदस्यों को बधाई। हां इस वर्ष कोविड महामारी के चलते मजबूरी में डा.निर्मल यादव, डा.सुभाष मेहरा जैसे पहले ही दिन से हमारे साथी रहे लोग सेवानिवृत हुए। उनका योगदान हमेशा याद रहेगा। ट्रस्ट सचिव आदित्य मूर्ति ने उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद दिया और कहा कि इस वर्ष ने हमें फैमिली और हेल्थ जैसे शब्दों से फिर से परिचित कराया। जिन्हें हम भूलते जा रहे थे। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों का आभार एसआरएमएस सीईटीआर के डा. राकेश दुबे ने और संचालन डा.रुचि शाह ने किया। इस मौके पर ट्रस्टी श्रीमती आशा मूर्ति जी और ट्रस्ट के सभी संस्थानों से गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

एसआरएमएस ट्रस्ट की ओर से अलखनंदा रिसार्ट में एकेडमिक लीडरशिप मीट 2020 का आयोजन पांच दिसंबर को किया गया। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, ट्रस्ट के संस्थानों में परस्पर संबंध और संवाद, ब्रांड बिल्डिंग, ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट, सामाजिक और सामुदायिक पहल पर विमर्श हुआ। ट्रस्ट चेयरमैन श्री देवमूर्ति जी ने सभी से इन पहलुओं पर काम करने का निर्देश दिया। जिससे भविष्य में अपने संस्थानों के जरिये एसआरएमएस ट्रस्ट और ज्यादा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ लोगों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान कर सके।

पंक्ति -1 (बायें से दायें) : डॉ. रोहित शर्मा, प्रो. शमशाद आलम, डॉ. एस.बी. गुप्ता, श्री आदित्य मूर्ति, श्री देव मूर्ति, श्री श्यामल गुप्ता, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. राकेश दुबे, डॉ. नीलिमा मेहरोत्रा, डॉ. नमिता दीक्षित
पंक्ति -2 (बायें से दायें) : डॉ. पियूष कुमार, डॉ. ललित सिंह, डॉ. एकता रस्तोगी, डॉ. रितु सिंह, कु. नाजिया परवीन, डॉ. रूचि जैन गर्ग, डॉ. बिन्दु गर्ग, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. आशिष चौहान, डॉ. अखिलेन्द्र सिंह यादव
पंक्ति -3 (बायें से दायें) : डॉ. रविन्द्र कुमार, डॉ. पी.एल. प्रसाद, डॉ. एल.एस. मौर्य, डॉ. राहुल गोयल, इं. सोवन मोहंती, डॉ. शशांक शाह

### एसआरएमएस आईएमएस में वर्चुअल साइटोपैथोलाजी सीएमई, विशेषज्ञ चिकित्सकों ने दी जानकारी

# शीघ्र व सही जांच से ही बीमारी का सटीक इलाज

साइटोपैथोलॉजी सीएमई के दौरान मंच पर डॉ. तनु अग्रवाल, डॉ. रोहित शर्मा, डॉ. एन.के. अरोड़ा, डॉ. हेमापंत, डॉ. सुरभि पाण्डेय

**बरेली:** एसआरएमएस मेडिकल कालेज में रविवार को इंडियन एकेडमी आफ साइटोपैथोलाजिस्ट के यूपी चैप्टर की वर्चुअल साइटोपैथोलाजी सीएमई का आयोजन हुआ। इस वेबिनार में देश के नामचीन विशेषज्ञ डाक्टरों ने रोगों की जांच में होने वाले आधुनिक बदलावों की जानकारी दी। विशेषज्ञों ने केस स्टडी के जरिये कहा कि किसी भी बीमारी का इलाज उसकी सटीक और शीघ्र जांच से ही सुनिश्चित होता है। इसमें आधुनिक तकनीक अपनाना जरूरी है। एसआरएमएस मेडिकल कालेज के आडिटोरियम में पूर्वाह्न वेबिनार का आरंभ हुआ। कार्यक्रम आयोजन कमेटी की सेक्रेटरी व एसआरएमएस मेडिकल कालेज के पैथोलाजी विभाग की प्रमुख प्रोफेसर डा. तनु अग्रवाल, डा.एनके अरोरा, डा.रोहित शर्मा, डा. हेमा पंत और डा.सुरभि पांडेय ने मां सरस्वती को पुष्पांजलि अर्पित की और दीप प्रज्वलन किया। डा. तनु ने सभी लोगों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि साइटोपैथोलाजी पैथोलाजी की एक सहायक ब्रांच है। इसमें सेल से संबंधित सभी परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। यह रोगों की पहचान और निदान के लिए एक किफायती, सरल व फास्ट तकनीक है। सीएमई का उद्देश्य इस क्षेत्र में विकसित हो रही नयी तकनीकों के बारे में एक दूसरे को अवगत कराना है। इसके बाद इंडियन एकेडमी आफ साइटोपैथोलाजिस्ट के यूपी चैप्टर के प्रेसिडेंट डा.अतुल गुप्ता ने कार्यक्रम की जानकारी दी। नई दिल्ली स्थित एम्स के प्रोफेसर डा.संदीप माथुर ने इफ्यूजन साइटोलाजी विषय पर चर्चा की। उन्होंने कैंसर रोगों में छाती व पेट में पानी की जांच पर चर्चा की और फ्लूड साइटोलाजी की आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी।

एनआईसीपीआर की साइंटिस्ट डा.रुचिका गुप्ता ने थाइमोलाइपोमा के एक मरीज का उदाहरण देते हुए साइटोलाजिकल डाइग्नोसिस में रेडियोलाजी करने के महत्व पर बात की। बच्चों में होने वाले मीडियास्टीनल ट्यूमर के संबंध में बताया। एसएनएमसी आगरा की प्रोफेसर डा. दीपा रानी ने भी एक महिला मरीज की केस स्टडी का जिक्र करते हुए जांच में आधुनिक तकनीक अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी बीमारी का इलाज उसकी सटीक जांच से ही संभव है। यह जांच जितनी शीघ्र हो मरीज के लिए उतना ही अच्छा। सैंफई मेडिकल कालेज की एसोसिएट प्रोफेसर डा.सविता अग्रवाल ने भी 25 वर्षीय मरीज के ब्रेन ट्यूमर की केस स्टडी में ब्रेन ट्यूमर को स्क्वाश साइटोलाजी से डाइग्नोसिस के विषय में जानकारी दी। नई दिल्ली स्थित यूसीएमएस के प्रोफेसर डा.वीके अरोरा ने थाइरोइड ग्लैंड के फोलिकुलर लेसिन्स के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उन्हें सटीकता से पहचाने के लिए सुझाव दिए। एसजीपीजीआई

संस्थान गीत

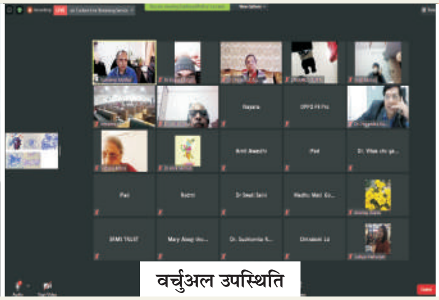
वर्चुअल उपस्थिति

दीप प्रज्वलन

लखनऊ के प्रोफेसर डा.राम नवल राव, एसएमसी मेरठ की प्रोफेसर डा.रानी बंसल, एमएमसी मुजफ्फरनगर के प्रोफेसर डा.आलोक मोहन ने स्तन कैंसर, ब्रेन ट्यूमर व लिंफनोड की गांठ की जांच में साइटोलाजी के रोल का वर्णन किया। इसके साथ ही चेयरपर्सन के रूप में आरएमएल मेडिकल कालेज लखनऊ के प्रोफेसर डा.नुजहत हुसैन, प्रयागराज के एमएलएनएमसी के प्रोफेसर डा.वात्सल्य मिश्रा, आईसीएमआर के सीईओ डा.रवि मेहरोत्रा, एसजीपीजीआई लखनऊ के प्रोफेसर नरेंद्र ध्यानी और आरएमसीएच बरेली के प्रोफेसर डा.रंजन अग्रवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। केजीएमयू लखनऊ की प्रोफेसर डा.माला सागर एवं एएमयू अलीगढ़ के प्रोफेसर डा.निशात अफरोज ने केस स्टडी प्रस्तुत की। वेबिनार में देश के कोने कोने से पीजी स्टूडेंट्स ने 110 साइटो पोस्टर प्रस्तुत किए। इनमें राम मनोहर लोहिया मेडिकल कालेज की छात्र डा.गौरी गौड़ और डा.रुचिता ने प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। एसआरएमएस मेडिकल कालेज की पैथालोजी पीजी छात्र डा. स्वर्णीत ने तीसरा स्थान हासिल किया। पोस्टर का चुनाव मेदांता हास्पिटल लखनऊ की डा.मधुमति गोयल, सुभारती मेडिकल कालेज की प्रोफेसर डा.रानी बंसल, एएमयू अलीगढ़ की प्रोफेसर डा.वीना महेश्वरी, और मुजफ्फरनगर मेडिकल कालेज के प्रोफेसर डा.अनुपम वार्ष्णेय ने किया। वेबिनार के समापन पर इंडियन एकेडमी आफ साइटोपैथोलाजिस्ट के यूपी चैप्टर के सेक्रेटरी डा. अनुराग गुप्ता ने उपस्थित विशेषज्ञों का आभार जताया और आयोजन समिति की ज्वाइंट सेक्रेटरी व एसआरएमएस मेडिकल कालेज की एसोसिएट प्रोफेसर डा.सुरभि पांडेय ने सभी का धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का आफलाइन संचालन डा.शानू गुप्ता और आनलाइन संचालन डा.प्रेरणा वलेचा ने किया। इस मौके पर डा. ललित सिंह, डा.स्मिता गुप्ता, डा.संजय गुप्ता, डा.पीएल प्रसाद, डा. नीरज प्रजापति, डा.मिलन जायसवाल, डा.शशिबाला, डा.पवन मेहरोत्रा, डा.धर्मेंद्र, डा. अपसर खान मौजूद रहे।

# एचआईवी के प्रति सावधानी बरतनी जरूरी

अर्बन हैल्थ सेंटर

एसआरएमएसआईएमएस ऑडिटोरियम

रूरल हैल्थ सेंटर

**बरेली:** विश्व एड्स दिवस पर पहली दिसंबर को श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज की ओर से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. धर्मेंद्र कुमार गुप्ता ने मेडिकल कालेज के मिनी आडिटोरियम में मरीजों और उनके परिजनों को एचआईवी एड्स संबंधी जानकारी दी। जबकि असिस्टेंट प्रोफेसर डा.अभिनव पांडेय ने अस्पताल के रिसेप्शन एरिया में लोगों को जागरूक किया। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डा. अतुल कुमार ने मेडिकल कालेज के रामपुर गार्डन स्थित अर्बन सेंटर पर गोष्ठी के जरिये एड्स के प्रति लोगों को जागरुक किया।

डा.धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि पहली दिसंबर को विश्व एड्स दिवस मनाया जाता है। इस दिन जागरूकता कार्यक्रम चला कर लोगों को एचआईवी की जानकारी दी जाती है। यह एक गंभीर बीमारी है। यह एक दूसरे से फैलता है। इसके संक्रमण से प्रतिरोधी क्षमता खत्म हो जाती है। इससे व्यक्ति बीमार हो जाता है। यह बीमारी के बारे में जानकारी सबसे पहले यूएस में 1981 में हुई। जबकि हमारे देश में इसका पहला मरीज चेन्नई में 1986 में मिला। इसके बाद मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती चली गई। इसमें डायरिया, वजन कम होना, उल्टी जैसे मुख्य लक्षण हैं। यह लक्षण वायरस संक्रमण से कुछ महीनों बाद ही दिखने लगते हैं। कभी कभी वायरस के साइलेंट रूप में शरीर में पड़े रहने की वजह से बीमारी के लक्षण दस वर्ष तक भी नहीं दिखते। बीमारी से ज्यादा इससे बचाव ही सबसे अच्छा उपाय है। इसमें प्रयोग की गई सिरिंज का फिर से इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। बाल कटवाते समय नई ब्लेड का ही इस्तेमाल करना चाहिए। डा.धर्मेंद्र ने संक्रमित रक्त संचरण, संक्रमित मां से नवजात शिशु, असुरक्षित यौन संबंध समेत कई बिंदुओं पर एचआईवी से बचाव और रोकथाम पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संक्रमण के बाद इसकी दवाइयां भी हैं। इसलिए उपचार से घबराना ठीक नहीं। समय समय पर चिकित्सक से मिल कर अपनी जांच करवाते रहना जरूरी है। हां इस बीमारी के बारे में लोगों में भ्रांतियां भी बहुत हैं। लोग इसे छूत की बीमारी मान कर इससे संक्रमित व्यक्ति से बचने लगते हैं। जबकि ऐसा नहीं है। किसी भी संक्रमित व्यक्ति से मिलने, हाथ मिलाने या गले मिलने से संक्रमण फैलने की संभावना नहीं होती। गोष्ठी में मरीज और उनके तीमारदारों के साथ ही डाक्टर्स, इंटर्न, नर्सिंग स्टाफ, क्वालिटी और मार्केटिंग टीम के लोग भी उपस्थित रहे। धौरा टांडा स्थित एसआरएमएस मेडिकल कालेज के रूरल सेंटर पर भी जागरूकता कार्यक्रम हुआ। जिसमें चिकित्साधिकारी डा.आशीष कुमार ने लोगों को एड्स की जानकारी के साथ ही उससे बचाव के बारे में बताया।

श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता 2017 में प्रथम स्थान प्राप्त कहानी

# महान त्याग का उल्टा गणित

लेखक- अंशिका अग्रहरि (370, चौक, बाटा गली, मेजरगंज, सुल्तानपुर, उ.प्र.)

जब कोई वृहद लक्ष्य के लिए मिटने चलता है तो वह बन जाता है। जब कोई विराट उद्देश्य के लिए अपना कुछ न्यौछावर करता है तो कई गुणा ज्यादा उसकी झोली में आ गिरता है। जरा अंधेरी चलने तो दो फिर देखो कैसे बड़ी आंखें भी मुंद जाती हैं। जीवन की सच्चाई है यह! किसान की यह कथा इसी सत्य को उजागर कर रही है।

किसान का बेटा दुसाध्य रोग से पीड़ित था। ठीक हो सकता था, लेकिन सौ अशर्फियां किसान कहां से लाए? वैद्यराज ने शुल्क के रूप में अशर्फियां मांगी थीं। किसान को यूं लग रहा था कि उसका बेटा जैसे एक रेत की मिट्टी के समान मुट्ठी भर है जो कण-कण करके छिद्रों से रिसता चला जा रहा है। जिस बाप ने बेटे को अपने कंधों पर बिठा कर चावों से पाला हो, यदि उन्हीं कंधों पर उस बेटे की अर्थी का बोझ आ जाए, तो उन कंधों को कंधा कौन दे सकता है! बंजर जमीन भी दो- चार हरी पत्तियां अपने आंचल तले रखती है, लेकिन इस गरीब किसान के घर में तो खुशी का ऐसा अकाल था कि दूर दूर तक बस विलाप ही विलाप था।

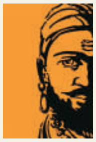

लेकिन तभी... भगवान की मूर्ति के समक्ष नतमस्तक किसान के कानों में मुनादी के ये शब्द पड़े। सुनो..., सुनो..., सुनो...! हर आम और खास को सूचित किया जाता है कि मुगल सल्तनत के बैरी शिवाजी महाराज की सूचना देने वाले को मुगल बादशाह की ओर से तीन सौ अशर्फियां इनाम में दी जाएंगी। किसान ने सुना तो उसे लगा जैसे कि भगवान ने ही उसकी पुकार सुन यह मौका उपलब्ध कराया है। वह भावातिरेक में बोला- हे प्रभु ! मेरे विट्ठल, पांडुरंगा ! तूने मेरे जीवन के रंग को फीका पड़ने से बचा लिया। कौन कहता है कि तू पत्थर का है, सुनता नहीं ! तू सच में दीनों का नाथ दीनानाथ है।

दरअसल, शिवाजी किसान के घर के पीछे के मकान में ही छिपे थे। पर चूंकि वहां सभी शिवाजी के समर्थक थे, इसलिए कोई मुगल बादशाह को उनके बारे में बता नहीं रहा था। यह गरीब किसान भी शिवाजी का समर्थक था। कई बार उन्हें चोरी से भोजन भी पहुंचा कर आया था। लेकिन आज अपने बेटे के प्राणों की उसे ऐसी चिंता लगी कि शिवाजी को ही बैरियों का भोजन बनाने की सोच बैठा। शिकारी तो बहुत देखे, लेकिन अपनी चिड़िया बचाने के लिए गरुण के ही पंख काट डाले, ऐसे पहली बार होने को था। जुगनू की टिम टिम की खातिर कोई सूरज पर ही थूक दे, तो उससे क्या और कैसी उम्मीद ! किसान की बुद्धि पर मोह का ऐसा पत्थर पड़ा था कि उसे अपने बेटे के जीवन के सिवाय कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। वह नहीं समझ पा रहा था कि उसके घर से अर्थी न उठे, इसके लिए शिवाजी मराठा को पकड़वा कर वह हजारों मराठों की अर्थियां एक साथ उठवाने का जघन्य पाप करने जा रहा था। ऐसा भी क्या हंसना कि उसका मूल्य रो- रो कर आने वाली कई पीढ़ियों तक को चुकाना पड़े ! देवता दानव सा बन गया था।

किसान दौड़ता हुआ घर आया। बोला- सुनो भाग्यवान सुनो, देखो बहू! प्रभु ने हमारी सुन ली। हमारे बेटे के इलाज के लिए अशर्फियों का इंतजाम हो गया। बधाई हो बहू, तेरे सुहाग की रक्षा हो गई। अब तुम बस रोना धोना छोड़ो। खुश हो जाओ। जो खुशी दूसरी की अर्थी उठाकर मिले उसे खुशी कहना क्या ठीक है? लेकिन उस किसान को इससे क्या लेना देना था! बस उसके बेटे की प्राण माला न टूटे, यही उसका एकमात्र लक्ष्य था।

सुनो जी, मैने कहा, सौ अशर्फियां किसने दीं? किसान से जब पत्नी ने पूछा, तो वह दोनों हाथ मलता हुआ बोला- भागवान सौ नहीं तीन सौ! बस रात को सारी गोटियां ठीक बैठ गईं, तो फिर देखना! पुत्रधन को पाने के साथ साथ हम धन्ना सेठ भी कहलाने लगेंगे। बहू पर्दे के पीछे खड़ी सब सुन रही थी। ससुर के इन शब्दों ने अचानक उसके आनंद के दूध में मानों चार बूंदे खटाई की डाल दीं। गोटियां... ? आखिर गोटियों जैसा छिछला शब्द ससुर जी ने क्यों प्रयोग किया? उसके भीतर सवालों के तेवर फन उठाने लगे, भला तीन गुना रकम कौन देगा? फिर वह भी रात को ही क्यों? इतने में यही उसकी सास ने भी पूछ लिया। अरे भागवान... वो शिवाजी हैं न। उन्हें पकड़वा कर, तीन सौ अशर्फियां मिलेंगी। वैसे भी आज नहीं तो कल मुगलों ने उन्हें पकड़ कर मार ही डालना है। तो कल की जगह आज उनके मरने से हमारे पुत्र के प्राण बचते हैं तो क्या बुरा है? किसान के अंदर का मानो विभीषण मर गया था और रावण जिंदा हो गया था। बहू ने यह सुना तो मानो उसके पैरों तले की धरती ही फट गई। वह सोचने लगी भारत वर्ष की असंख्य सुहागिनों का सुहाग शिवाजी की ही तो देन है और मैं अपनी मांग के सिंदूर का रंग लाल रखने क लिए शिवाजी के खून की रंगाई चढ़ा दूं। ऐसी सुहागिन होने का क्या फायदा, जब हर झलक में बस यही दिखे की तेरी लाल सुहागिन साड़ी का मोल शिवाजी का कफन है। नहीं नहीं... मुझे स्वयं पर लिपटी सफेद साड़ी मंजूर है। लेकिन शिवाजी पर लिपटा सफेद कफन नहीं। फिर पिताजी पुत्र मोह में इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हैं। भला किसी की छाती पर आग लगा कर सेकी गई रोटी खाने पर पच सकती है? उन्हें पुत्र प्यारा है, लेकिन शिवाजी के नहीं रहने से कितने पुत्रों की फसल अंकुरित होने से पहले ही मसल दी

जाएगी। यह उन्हें क्यों समझ नहीं आया ? क्या मात्रभूमि से बड़ा कोई होता है ? मैंने तो सोचा था कि अपने होने वाले बच्चे का नाम शिवाजी रखूंगी। उनकी वीरगाथाएं सुनाकर उसे भी देशभक्त बनाऊंगी। पर क्या अब उन्हीं वीर शिवाजी की मृत्यु का कारण मैं बनूंगी ? शिवा नहीं रहे, अन्य माताएं अपनी संतानों को शिवाजी की कथा सुनाते हुए क्या कहेंगी ? यही न कि बच्चों तुम अपने पिता की छत्र छाया में इसलिए नहीं पल पाए, क्योंकि किसी स्वार्थी औरत ने अपने सुहाग के लिए पूरे भारत के सुहागों की बलि चढ़ा दी थी। हे पांडुरंगा, शिवाजी तो तेरे साक्षात दूत हैं और दूत की मात्र अवज्ञा से रावण की लंका जल गई थी और मैं दूत को जला ककर अपनी लंका सजाए रखने की उम्मीद पाल लूं। न न... मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगी। मुझे अपने हित के लिए मेरे ससुर का पुत्र नहीं, बल्कि देश हित के लिए जीजाबाई का पुत्र चाहिए। मुझे मेरा स्वामी नहीं, बल्कि पूरे भारतवर्ष का स्वामी चाहिए। मैं ऐसा करके ही रहूंगी। सूर्य ढल गया था। चंद्रमा तारों की बारात लेकर नभ पर पहुंच चुका था, लेकिन इस बारात में शहनाई की गूंज नहीं बल्कि सन्नाटे का शोर था। क्योंकि इस रात को भी अहसास था कि कहीं बहू की पावन भावनाओं को पिता के मुत्रमोह की काली स्याही पुत गई तो हमसे काली तो फिर रात न होगी। इसलिए रात भी मानों अपने आराध्य से प्रार्थना कर रही थी। मैं काली हूं प्रभु, क्योंकि रात हीं पर नियति मुझसे भी ज्यादा काली हो सकती है, यह तो मैं आज ही देख रही हूं। माना कि मेरी आड़ में पाप फलते फूलते हैं, लेकिन कितनी ही बार मैंने शिवाजी को अपनी ओढ़नी ओढ़ कर इन मुगलों से बचाया है। मैंने काली होकर भी दूध सा पुण्य कमाया है। प्रभु इस पुण्य की श्रंखला को टूटने मत देना। वीर शिवा इस गांव को ही नहीं, पूरी धरा को ही चाहिए। मेरी पुकार अनसुनी मत करना। खैर रात भावों के साथ गहरी से गहरी होती चली गई। उधर वह किसान शिवाजी की खबर देने के लिए मुगल चौकी की ओर बढ़ गया। मां बेटे के पास बैठी माथा सहला रही थी और इधर बहू इतनी घनी रात में आज घर की दहलीज लांघ गई या लक्ष्मण रेखा। यह आप विश्लेषण करें। क्योंकि हर दहलीज को लक्ष्मण रेखा मान लेना ठीक नहीं है। जहां कुछ जगह इसे लांघने पर रोने के सिवा दूसरा भाग्य नहीं, वहीं कहीं इसे लांखने से बड़ा कोई सौभाग्य नहीं। सीताजी ने तहलीज लांघी तो तीनों जहां का विलाप उनकी झोली में आ गिरा। वहीं विभीषण ने लंका की तहलीज लांघी तो प्रभु श्रीराम जी मिल गए। अब बहू को क्या मिलता है देखना यह है। ठक ठक ठक ! अंदर से कोई प्रत्युत्तर न आया। शायद ठक ठक करना पर्याप्त नहीं था। हे वीर शिवाजी, मराठों के सरदार शीघ्र किवाड़ खोलिए। मैं वैरी नहीं बल्कि आपकी शुभचिंतक हूं। इस दर्द भीरी करुण आवाज को सुनकर स्वयं शिवाजी महाराज ने किवाड़ खोल दिया। किवाड़ खुलते ही वह नारी शिवाजी के चरणों में गिर पड़ी।

रोती बिलखती बोली... महाराज आप शीघ्र यह घर छोड़ कर कहीं निकल जाएं। आपको पकड़ने मुगल सैनिक बस आते ही होंगे। यह कह कर उसने एक ही सांस में पूरी व्यथा सुना डाली। उसे सुन शिवाजी की आंखें भीग गई और तैयरा यह पानी गंगा जल बन उनकी आत्मा तक को ठंडक पहुंचा गया। उन्हें लगा हमारी क्रांति तो केवल कुछ सैनिकों को आंदोलित कर सकती है पर साधारण जनों के दिलों में यूं त्याग का झरना फूट पड़ना यह तो मेरे गुरुदेव की ही पा हो सकती है। वरना कौन किसी बेगाने के लिए अपनों का शीश थाली में परोसने की हिम्मत जुटा सकता है। लेकिन शिवा तू इतना स्वार्थी कैसे हो सकता है ? अपने जीवन का पुण्य खिलता क्या देखा, तुझे किसी दूसरे के मुरझाना नहीं दिख रहा। सामने खड़ी नारी ने बेवा होना स्वीकार कर लिया है। सिर्फ इसलिए कि स्वराज को तेरी आवश्यकता है, लेकिन पति विहीन पहाड़ सी जिंदगी यह कैसे काटेगी ? ऐसा कष्ट तो भीष्म ने तीरों की शैय्या पर भी नहीं भोगा होगा। जो ताउम्र मेरी इस बहन को भोगना पड़ेगा। मैं ऐसा कैसा भाई जो अपनी बहन को विधवा कर स्वयं पत्नी का सिंदूर बरकरार रखूं ? गुरुदेव ने यह तो मुझे कभी नहीं सिखाया। बहन का मान पा चुकी वह किसान की बहू समझ गई। महाराज ! जान गई कि आपका हृदय शायद इस बात की गवाही नहीं दे रहा, लेकिन देवा हमें आपके द्वारा स्वराज का सपना साकार होता दिखाई दे रहा है। रही बात मेरे पति की तो कौन सा इस धरती पर कोई पहली स्त्री विधवा होने जा रही है। मेरी मांग से सिंदूर मिटे तो मैं समझ लूंगी। लेकिन इस धरती से मेरे सिंदूर की खातिर शिवा उठ जाए क्या यह समझने अथवा समझाने योग्य होगा ? हे देवा आप मेरे पति की चिंता न करें। शीश का एक बाल उखाड़ने से अगर शीश बना रहता है, तो उत्तम तो यही होगा न ! कुर्बानी के इस दौर में मुझ तुच्छ की भी कुर्बानी हो जाएगी। इसलिए आप मेरे विधवा होने की चिंता छोड़ें और शीघ्र यहां से प्रस्थान करें।

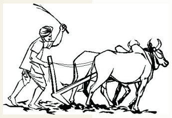

शिवा का गला भर आया। बहन तू क्या जाने मेरा ठाकुर मुझे क्या क्या सिखा रहा है ? मैं मर भी जाऊं तो भी अब गम नहीं, क्योंकि तेरी इस भावना ने मेरे इस दायित्व को और गहराई से अहसास करा दिया है। मैं अवश्य जाऊंगा यहां से, लेकिन अपनी बहन के प्यार को स्वीकार कर और उसके सिंदूर की लाज रख कर। लो बहन ये सौ अशर्फियां। इनमें मेरी बहन के सुहाग की सलामती छिपी है। बहन के हाथों पर अशर्फियों की पोटली रख कर शिवाजी बिजली की गति से वहां से निकल पड़े। बहन लेकिन वहीं खड़ी रही। कितनी देर अपलक खोई सी शिवाजी को जाते हुए देखती रही। सोच रही थी निकली तो थी पति के जीवन का त्याग कर स्वयं मिटने के लिए ! लेकिन पति का जीवन, भाई का प्यार, देश भक्त होने का गर्व ले भरी झोली के साथ खड़ी हूं। ऐसा ही होता है कि जब कोई वृहद लक्ष्य के लिए मिटने चलता है तो वह बन जाता है। जब कोई विराट उद्देश्य के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करता है तो उससे कई गुना ज्यादा उसकी झोली में गिरता है। यही तो है महान त्याग का उल्टा गणित।

(समाप्त)

एनएबीएल मान्यता, आईएमएस, बरेली

## माइक्रोबायोलाजी विभाग, सेंट्रल रिसर्च लैब को एनएबीएल मान्यता

**बरेली:** एसआरएमएस आईएमएस के माइक्रोबायोलाजी विभाग और सेंट्रल रिसर्च लैब को भी एनएबीएल मान्यता हासिल हो गई। इससे इस सेंट्रल रिसर्च लैब द्वारा कोविड 19 की जांच के लिए आरटीपीसीआर टेस्ट सभी के लिए शुरू कर दिए गए हैं। क्वालिटी और स्टैंडर्ड में पास होने पर माइक्रोबायोलाजी विभाग और सेंट्रल रिसर्च लैब को एनएबीएल सर्टिफिकेट दिया गया है। यह जानकारी माइक्रोबायोलाजी विभाग के एचओडी व सेंट्रल रिसर्च लैब के डायरेक्टर डा.राहुल कुमार गोयल ने दी। एसआरएमएस आईएमएस एनएबीएच द्वारा पहले ही मान्यता प्राप्त है। मॉलिक्यूलर लैब को भी एनएबीएल द्वारा मान्यता दी जा चुकी है।

डा.ललित सिंह, आईएमएस, बरेली

## आईजेसीसीएम के दिसंबर संस्करण में लिखा संपादकीय

एसआरएमएस मेडिकल कालेज के रेस्पिरेटरी एंड क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग के इंचार्ज डा.ललित सिंह ने क्रिटिकल केयर मेडिसिन के इंडियन जर्नल के दिसंबर संस्करण में संपादकीय लिखा। क्रिटिकल केयर मेडिसिन के इंडियन जर्नल के एडवाइजरी बोर्ड में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जापान, फ्रांस जैसे देशों समेत सात देशों के प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल हैं। ऐसे में इसका संपादकीय लिखना गर्व की बात है। डा.ललित भी इसे खुद के लिए बड़ी उपलब्धि मानते हैं। साथ ही इसका श्रेय एसआएमएस संस्थान को देते हैं। यह प्रतिष्ठित जर्नल सर्च इंजन पबमेड से सूचीबद्ध है और मेडिसिन डेटाबेस उपलब्ध कराता है।

डा.हिमांशी खट्टर, आईएमएस, बरेली

## यंग रेडियेशन ओंकोलाजिस्ट क्लब में पहला स्थान

एसआरएमएस मेडिकल कालेज की जूनियर रेजिडेंट डा. हिमांशी खट्टर ने यंग रेडियेशन ओंकोलाजिस्ट क्लब की ओर से हुए क्विज कंपटीशन में पहला स्थान हासिल किया। यंग रेडियेशन ओंकोलाजिस्ट क्लब की ओर से फिजिक्स का तीन महीने का कोर्स आयोजित किया गया। इसमें एम्स, एसजीपीजीआई सहित दूसरे बड़े संस्थानों के रेडियेशन ओंकोलाजिस्ट शामिल हुए। इसमें डा.हिमांशी खट्टर भी शामिल हुई। कोर्स के समापन पर एसेसमेंट एग्जाम में डा.हिमांशी ने 196 प्रतिभागियों के बीच पहला स्थान हासिल किया। क्लब की ओर से डा.खट्टर को क्लीनिकल ओंकोलाजी की बुक प्रदान की गई।

डा.ध्रुव गोयल, गुडलाइफ हास्पिटल, बरेली

## एसआरएमएस गुडलाइफ में हिप रिप्लेसमेंट का पहला आपरेशन

सितंबर में एसआरएमएस मेडिकल कालेज ज्वाइन करने वाले डा. ध्रुव गोयल एसआरएमएस गुडलाइफ में भी मरीजों को देखते हैं। आर्थोपैडिक सर्जन डा.ध्रुव ने गुडलाइफ में तीन महीने में ही डेढ़ दर्जन से ज्यादा मरीजों के घुटनों का सफल आपरेशन किया है। घुटनों को तकलीफ से निजात पाने वाले उनके मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। डा.ध्रुव ने 14 दिसंबर को जाटवपुरा निवासी विनोद व्यास का सफल टोटल हिप रिप्लेसमेंट किया। यह उनका पहला हिप रिप्लेसमेंटट आपरेशन था।

एसआरएमएस हास्पिटल, उन्नाव

## चर्म रोग का शल्य चिकित्सक की विधि से उपचार

उन्नाव के कुसुंभी निवासी राजाराम (65 वर्ष) की कोहनी में इंफेक्शन की वजह से वहां की त्वचा सड़ गयी थी। जिससे काफी बड़ा घाव था। इसका इलाज कराने वह 20 दिसंबर को उन्नाव स्थित एसआरएमएस हास्पिटल पहुंचे। 24 दिसंबर को हास्पिटल की मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.मीनाक्षी शर्मा के निर्देशन में उनका आपरेशन हुआ। इस दौरान उनके जांघ की त्वचा लेकर कोहनी में ग्राफ्टिंग हुई। आपरेशन में सर्जन विश्वनाथ सिंह, डा.रोहित वामन, डा. शिवेंद्र शुक्ला, निशा चेतना और अन्य सहयोगी शामिल रहे।

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST 1990-2020 30 GLORIOUS YEARS INDIA

डा.सोवन मोहंती, सीईटी, बरेली

## बेहतर ब्राडबैंड कनेक्शन के लिए बनाया एंटीना

ब्राडबैंड की बैंडविथ इफीशिएंसी बेहतर करने के लिए सीईटी में एसोसिएट प्रोफेसर डा.सोवन मोहंती ने डाइलैक्ट्रिक रेसोनेटर एंटीना डिजायन किया है। यह एंटीना सफलतापूर्वक 97.62 और 16.09 की ब्रैंडविथ के साथ सफलतापूर्वक काम करने में सक्षम है। इसमें उचित पीक गेन 3.82 डीबीआई और रेडिएशन इफीशिएंसी 97.62 फीसद है। बैंड वन (3.41 से 3.97 गीगा हर्ट्स तक) और बैंड टू (3.79 और 5.04 गीगा हार्ट्स तक) जैसी अपनी छोटी आयताकार संरचना के साथ यह एंटीना इंटरनेट को पांच गीगा हर्ट्स और उससे ज्यादा तक की स्पीड देता है। साथ ही मोबाइल ब्राडबैंड की स्पीड बढ़ाने में भी पूरी तरह सक्षम है।

## 15 वर्ष से बनती थी सिर्फ ब्रेड, अब पैटीज, बन और कुकीज भी बनने लगी

# बदलने से भाने लगा है सुवास बेकरी का स्वाद

**बरेली:** गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और न्यूनतम खर्च पर विश्वस्तरीय इलाज लोगों के लिए उपलब्ध कराने वाले एसआरएमएस ट्रस्ट ने कोविड महामारी के दौर में एक और मुकाम हासिल किया। ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने अपने पंद्रह साल पुराने फैसले की लाकडाउन में समीक्षा की और उसे और बड़ा रूप देते हुए आगे बढ़ाया। यह फैसला था ट्रस्ट द्वारा संचालित बेकरी का। ट्रस्ट के संस्थानों की मेस और कैंटीन के लिए इसमें सिर्फ ब्रेड ही बनायी जाती थी। लाकडाउन में इसे 'सुवास' बेकरी नाम देकर इसमें कई बेकरी प्रोडक्ट जोड़े गए। एसआरएमएस सीईटी में स्थापित इस बेकरी की तीन माह से अतिरिक्त जिम्मेदारी संभाल रही एमबीए विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर स्वप्निल मिश्रा कहती हैं कि जब बेकरी को बड़ा रूप देने का फैसला किया गया, तभी चेयरमैन सर ने मुझे इसकी जिम्मेदारी दी। यहां स्टाफ भी नियुक्त हुआ और नए प्रोडक्ट बनाना शुरू हुआ। अब हम लोग यहां पर ब्रेड के साथ ही कुकीज, बन, पैटीज, पिज्जा बेस बनने लगे हैं। बेहतर क्वालिटी और स्वादिष्ट होने से इन सभी प्रोडक्ट्स का स्वाद जल्द ही सभी को भाने भी लगा है। सामान की आपूर्ति अभी आन लाइन आर्डर पर सिर्फ ट्रस्ट से संबंधित लोगों और अपने संस्थानों में रहने वालों को ही कर पा रहे हैं। दोपहर तक वेबसाइट के जरिये होने वाले आनलाइन आर्डर की डिलिवरी उसी दिन शाम चार बजे तक संबंधित व्यक्ति को कर दी जाती है। स्वप्निल कहती हैं कि हमारी बेकरी के प्रोडक्ट की यूएसपी उनका ताजा होना और बिना किसी प्रिजर्वेटिव्स के होना है। प्रोडक्ट बनाते समय हम स्वच्छता और गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखते हैं। बेकरी में कार्यरत सारा स्टाफ भी इसका विशेष रूप से पालन करता है। जल्द ही पेस्ट्री, केक के साथ दूसरे बेकरी प्रोडक्ट भी बनाने लगेंगे।

### लॉकडाउन में बेकरी प्रोडक्ट की कमी पर लिया फैसला

एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी कहते हैं कि 15 वर्ष से संचालित बेकरी को बड़ा करने का फैसला लाकटाइन के दौरान बेकरी प्रोडक्ट की कमी के चलते उन्होंने लिया। यहां ब्रेड पहले ही बनती थी, अब कुकीज, बन, पैटीज, पिज्जा बेस भी बनने लगा है। गुणवत्तापूर्ण और ताजे प्रोडक्ट होने की वजह से इनका स्वाद भी अच्छा है और यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी नहीं। अभी सिर्फ ट्रस्ट परिवार के लोगों को ही इनकी आपूर्ति की जा रही है। संभव है शीघ्र ही आम लोगों के लिए भी यह बेकरी प्रोडक्ट उपलब्ध कराए जाएं।

- एसआरएमएस ट्रस्ट के लोगों, मेस और कैंटीन में हो रही सप्लाई
- जल्द ही पेस्ट्री, केक और के साथ दूसरे बेकरी प्रोडक्ट भी बनेंगे

SRMS
SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
SUVAAS
(100% Vegetarian Bakery for Trust Family)

## NEW EMPLOYEE

(Till 27th Dec. 2020)

**डा.शामिल सी बी,** प्रिंसिपल
एमएससी नर्सिंग, पीएचडी
एसआरएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल एंड नर्सिंग, उन्नाव

**डा.मीनाक्षी शर्मा,** मेडिकल सुपरिंटेंडेंट
एमबीए, पीएचडी (मैनजमेंट)
एसआरएमएस हास्पिटल, उन्नाव

**डा.राकेश दुबे,** प्रोफेसर
मैथमेटिक्स डिपार्टमेंट
एसआरएमएस सीईटीआर, बरेली

**डा.वेलमुरुगन पवनन,** प्रोफेसर
मैकेनिकल इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**डा.अनंथ एस,** प्रोफेसर
मैकेनिकल इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**ब्रिगे. लीना कुमारी,** नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट
बीएससी नर्सिंग, नर्सिंग डिपार्टमेंट
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

**डा.सिद्धार्थ दुबे,** कंसल्टेंट
एमएस (आर्थोपैडिक्स) एम्स, नई दिल्ली
एसआरएमएस गुडलाइफ, बरेली

**आशुतोष यादव,** असिस्टेंट प्रोफेसर
एमबीए, यूजीसी नेट
एसआरएमएस आईबीएस, लखनऊ

**डा.अभिषेक प्रताप सिंह,** एसो. प्रोफेसर
मैकेनिकल इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**डा.सुरभि गुप्ता,** असिस्टेंट प्रोफेसर
एमडी (ओबीएस एंड गायनी)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

**प्रदीप कुमार,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**सौरभ बनर्जी,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**बीरबल सोलंकी,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**ललित कुमार नारायण,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**डा.अखिलेश पहाड़े,** असिस्टेंट प्रोफेसर
एमडी (एनेस्थेसिया)
एसआरएमएस आईएमएस, बरेली

**भानु प्रताप सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटी, बरेली

**सतीश सिंह मेकाले,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटीआर, बरेली

**सबीना अख्तर,** असिस्टेंट प्रोफेसर
कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग
एसआरएमएस सीईटीआर, बरेली

**बृजमोहन शर्मा,** नर्सिंग ट्यूटर
एसआरएमएस इंस्टीट्यूट आफ पैरामेडिकल एंड नर्सिंग, उन्नाव

## SELECTED IN SUPER SPECIALITY

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

**डॉ. सौरभ कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ जनरल सर्जरी
एसआरएमएसआईएमएस, बरेली

**डॉ. वानिका**
एसोसिएट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ पैथोलॉजी
एसआरएमएसआईएमएस, बरेली

एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थानों में संबद्ध होने वाले सभी नए एवं पदोन्नत साथियों को **बधाई एवं शुभकामनाएं...**

Crosswords No. 8

### HORIZONTAL
1.Small, portable personal computer
3.Converts electrical energy into mechanical energy
5.Appliance when heated used to press clothes
7.Type of pot specialised for boiling water
9. Small, portable device used to produce light
11.Hand held pointing device
13.Portable hand held electric light
15.Electronic kitchen appliance used to mix and grind food items
17.Used for connecting peripheral device to computer

### VERTICAL
2.Also known as idiot box
4.Invented by Grahm Bell, important communication device in day to day life
6.Sound communicating device usually by transmission of music
8. Insulated chamber mostly used for cooking, heating, baking
10.Most essential appliance in home used to circulated air in room
12.Electrical component that can connect or disconnect a conducting path in electrical circuit.
14.Electrical machine that transfers power from one circuit to another
16.Handset device used to operate various other devices
18. Electric light with wire filament heated until it glows

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का परिणाम अगले अंक में देखें

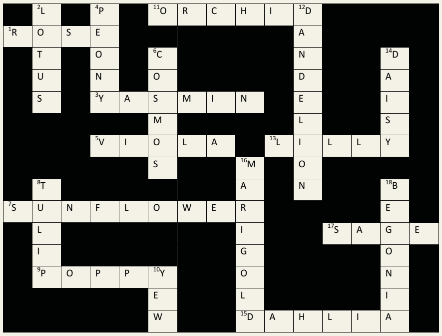

Answer: Crosswords No. 7

Sudoku No. 8

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 7 | | | | | 5 | |
| | | | | | | | | |
| | 8 | | 1 | | 4 | | | |
| | | 5 | | 7 | | 6 | | |
| | | | | | | | | 4 |
| 9 | | | | 3 | | 8 | | 1 |
| | | | | | | | 2 | |
| | | | | 9 | | | | |
| | 1 | | | | 8 | | | |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 2 | 6 | 3 | 4 | 9 | 8 | 7 | 1 |
| 4 | 1 | 8 | 7 | 5 | 2 | 6 | 3 | 9 |
| 7 | 3 | 9 | 1 | 8 | 6 | 4 | 2 | 5 |
| 8 | 5 | 7 | 6 | 1 | 3 | 2 | 9 | 4 |
| 2 | 9 | 4 | 8 | 7 | 5 | 1 | 6 | 3 |
| 3 | 6 | 1 | 2 | 9 | 4 | 7 | 5 | 8 |
| 1 | 7 | 3 | 9 | 2 | 8 | 5 | 4 | 6 |
| 9 | 8 | 5 | 4 | 6 | 7 | 3 | 1 | 2 |
| 6 | 4 | 2 | 5 | 3 | 1 | 9 | 8 | 7 |

Answer: Soduko No. 7

KRISHNA TRADERS

**TRUSTED PLACE TO SHOP FOR RADIODIAGNOSIS PRODUCTS**

Authorized Channel Partner: **CARESTREAM HEALTH INDIA PVT LTD**

- FULL ROOM DR SYSTEM
- RETROFIT DR SYSTEM
- CR SYSTEM
- A RANGE OF LASER PRINTERS

Authorized Channel Partner: **EPSILON HEALHCARE SOLUTIONS**

- C-Arm Machines
- HF X-Ray Machines
- LF X-Ray Machines
- OPG Machine
- Mammography

Authorized Channel Partner: **WIPRO GE HEALTHCARE PVT LTD (MDx)**

- A FAMILY OF CONTRAST MI
- OMNIPAQUE
- VISIPAQUE
- OMNISCAN
- CLARISCAN

Contact us: - A-20 BUTLER PLAZA, 1st Floor, Civil Lines, Bareilly
Ph- 9412293332, 9410009047 Email – alokrastogi05@yahoo.com